दैनिक
क्रांति समय
RNI.No. : GUJHIN/2018/75100
संपादक : सुरेश मौर्या मो. 9879141480
E-mail: krantisamay@gmail.com
सूरत, वर्ष: 1 अंक: 164, रविवार, 08 जुलाई, 2018, पेज: 4, मुल्य 1 रु.
ऑफिस:- 191 महादेव नगर, हरि नगर-2 के पीछे, उधना, जिला-सूरत, गुजरात
Email: krantisamay@gmail.com Web site : www.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

क्रांति समय
हिन्दी दैनिक अखबार में विज्ञापन, प्रेस नोट, जन्म दिन की शुभकामनाएँ, या अपने विस्तार में किसी भी समस्या को अखबार में प्रकाशित करने के लिए संपर्क करें:-
4-0 ब्लोक, आगाम नवकार कॉम्पलेकक्ष, नीयर सचिन रेल्वे स्टेशन,सचिन, सूरत-394230
मो. 9879141480

क्रांति समय
हमारे यहां पर एल.आई. सी., कार-बाईक-ट्रक का इन्सयोरेंशन, रेल टिकट, एयर टिकट बनवाने के लिए संपर्क करें:-
4-0 ब्लोक, आगाम नवकार कॉम्पलेकक्ष, नीयर सचिन रेल्वे स्टेशन,सचिन, सूरत-394230
मो. 8980974047

सार समाचार

अनियमितताओं की जांच करेगी विशेष समिति

नई दिल्ली (एजेंसी)। गाजीपुर स्थित कचरे से बिजली उत्पादन संयंत्र में कंपनी द्वारा तय शतरे के साथ काम नहीं करने समेत अन्य अनियमितताओं की जांच विशेष समिति करेगी। समिति गठित करने को स्थायी समिति अध्यक्ष सत्यपाल सिंह ने मंजूरी दे दी है। निगम पार्षद राजीव, संदीप [illegible] रेखा त्यागी, विधि विभाग व पर[illegible] बंधन विभाग के एक-एक अधिकारी भी इस समिति में शामिल होंगे।

एलजी का ध्येय है दिल्ली का समय खराब करना : भारद्वाज

नई दिल्ली (एजेंसी)। आप प्रवक्ता सौरभ भारद्वाज ने कहा है कि उपराज्यपाल का बयान दुखद है, और उनका एक ही ध्येय है - दिल्ली के कुछ महीने और ख़राब करने हैं। उपराज्यपाल ने उलटे मुख्यमंत्री को उपदेश दिया है- आप काम कीजिए, मैं आपके साथ हूं। उन्होंने कहा कि दिल्ली के विषय में देश का संविधान 1991 में बदला गया था, उसके बाद दिल्ली के नियम, संविधान सभी के लिए एक ही थे। जो अधिकार, संविधान ने दिल्ली की सभी सरकारों को दिए थे वो सभी तत्कालीन सीएम के पास थे। फिर केजरीवाल के सीएम बनने के बाद अधिकार कम कैसे हो गए।

मेट्रोकर्मियों के हड़ताल पर जाने से रोक के आदेश की समयावधि बढ़ी

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली हाईकोर्ट ने शुक्रवार को दिल्ली मेट्रो रेल कारपोरेशन (डीएमआरसी) के कर्मचारियों के वेतनमान में संशोधन सहित कई मांगों को लेकर हड़ताल पर जाने पर रोक के अपने आदेश की समयावधि बढ़ा दी और कहा कि ऐसा होने पर यात्रियों को बहुत असुविधा का सामना करना पड़ेगा। न्यायमूर्ति प्रतिभा रानी ने अगले आदेश तक हड़ताल पर नहीं जाने के लिए कर्मचारियों को निर्देश देने वाले अंतरिम आदेश की समयावधि बढा दी और डीएमआरसी द्वारा दायर उस याचिका पर उनका जवाब मांगा जिसमें उन्हें हड़ताल पर जाने से रोकने को कहा गया था। अदालत ने डीएमआरसी कर्मचारी परिषद के कुछ पदाधिकारियों को नये नोटिस जारी किये और इस मामले में आगे की सुनवाई के लिएचार सितम्बर की तारीख तय की। अदालत ने डीएमआरसी की ओर से पेश अतिरिक्त सालिसिटर जनरल संदीप सेठी से पूछा कि क्या याचिका अब महत्वहीन हो जाएगी क्योंकि हड़ताल की प्रस्तावित तारीख 30 जून बीत चुकी है। एएसजी ने कहा कि याचिका महत्वहीन नहीं हो सकती क्योंकि कर्मचारियों ने तीन नोटिस देकर कहा है कि अगर उनकी मांगें पूरी नहीं हुई तो वे हड़ताल करेंगे। कर्मचारी परिषद के कुछ पदाधिकारियों की ओर से पेश अधिवक्ता राजीव मिश्रा ने अदालत से अनुरोध किया कि डीएमआरसी को हलफनामा देकर यह कहने का निर्देश दिया जाये कि वह पिछले साल नियोजक और कर्मचारियों के बीच निकले समाधान का पालन करेंगे। अदालत ने कहा कि इस विषय से दलीलों के बाद निपटा जाएगा। पीठ ने छुट्टियों के दौरान अंतरिम आदेश में कहा था कि पहली नजर में , मेट्रो कर्मचारियों की कार्रवाई उचित या कानूनी नजर नहीं आती।

33 लाख नकदी लूट मामले में तीन बदमाश गिरफ्तार

नई दिल्ली (एजेंसी)। मॉडल टाउन इलाके में तकरीबन डेढ़ महीने पहले कैश कलेक्शन एजेंट से हथियार के बल पर 33 लाख रपए से भी ज्यादा के रकम की लूट के मामले को सुलझाते हुए वारदात में शामिल तीन बदमाशों को गिरफ्तार कर लिया है। पकड़े गए आरोपियों की पहचान बुराड़ी निवासी प्रदीप कुमार (36), अनुज उर्फ सोनू उर्फ प्रमोद (36) व उत्तर प्रदेश के मेरठ निवासी उपेन्द्र कुमार (33) के रूप में हुई। वारदात में लिप्तदो बदमाशों को घटना के कुछ दिन बाद ही गिरफ्तार कर लिया गया था। अतिरिक्त पुलिस उपायुक्त अजीत कुमार सिंगला ने बताया कि 25 मई को गिरफ्तार आरोपियों ने अपने अन्य साथियों के साथ मिलकर कार सवार एक कैश कलेक्शन एजेंट से हथियार के बल पर 33 लाख से भी ज्यादा रपए लूट लिए थे। जिसकी छानबीन के दौरान रोहिणी स्थिति क्राइम ब्रांच की टीम ने एक गुप्त सूचना के आधार पर कार्रवाई करते हुए रोहिणी स्थित बाहरी रिंग रोड पर बादली बस स्टैण्ड के पास घेराबंदी करते हुए तीनों बदमाशों को दबोच लिया। पूछताछ में पता चला कि फरार आरोपी अजरुन ही पूरे गैंग का सरगना है और लूट की वारदात का मास्टरमाइंड भी।

फोटो गैलरी

तोगड़िया भोपाल आए

भोपाल। अंतरराष्ट्रीय हिंदू परिषद के प्रमुख प्रवीण तोगड़िया शुक्रवार को भोपाल आए । तोगड़िया ने कहा कि नरेंद्र मोदी सरकार किसान विरोधी है। उन्होंने कहा कि सरकार ने किसानों के साथ वादाखिलाफी की है। तोगड़िया ने बताया कि 162 किसान संगठन कश्मीर से कन्याकुमारी तक यात्रा निकालेंगे और सरकार की वादाखिलाफी की बात किसानों को बताएंगे। उन्होंने लगातार हो रही किसानों की आत्महत्याओं पर भी सवाल उठाया। गौरतलब है कि प्रवीण तोगड़?या ने देशभर में हुए किसान आंदोलन के समय कहा था कि अब वे किसानों के मुद्दे भी उठाएंगे। इस मौके पर राष्ट्रीय किसान मजदूर संघ की मध्य प्रांत इकाई के अध्यक्ष शिवकुमार शर्मा कक्का जी भी मौजूद थे।

>> मुख्यमंत्री ने सभी आपत्तियां की खारिज

घर तक राशन पहुंचाने की योजना को मंजूरी

नई दिल्ली (एजेंसी)। मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने कहा कि उन्होंने घर तक राशन पहुंचाने के प्रस्ताव पर सभी आपत्तियों को खारिज करते हुए इसे मंजूरी दे दी है।

मुख्यमंत्री ने खाद्य विभाग को इस योजना को तत्काल लागू करने के भी निर्देश दिए।

उपराज्यपाल अनिल बैजल ने घर तक राशन पहुंचाने के दिल्ली सरकार के महत्वाकांक्षी प्रस्ताव पर आपत्ति जताई थी और इसे लागू करने से पहले आप सरकार को केंद्र के साथ विचार-विमर्श करने को कहा था।

केजरीवाल ने ट्विटर पर कहा कि राशन घर तक पहुंचाने की योजना को मंजूरी दे दी गई है। प्रस्ताव पर सभी आपत्तियों को खारिज कर दिया है। खाद्य विभाग को इसे तुरंत लागू करने के निर्देश दिए हैं।

विभाग को मुझे नियमित प्रगति की जानकारी देने के निर्देश दिए हैं। उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया की अध्यक्षता वाली व्यय वित्त समिति की बैठक में बताया कि दिल्ली प्रौद्योगिकी विविद्यालय में दो नये शैक्षणिक खंडों और तीन नये छात्रावासों के निर्माण को मंजूरी मिल चुकी है।

इससे डीटीयू में करीब तीन हजार छात्र नामांकन की क्षमता बढ सकेगी। मंत्रिमंडल ने पहले ही इस योजना को मंजूरी दे दी थी और अनुमति के लिए इसे उपराज्यपाल के पास भेजा था। उपराज्यपाल ने इसे वापस सरकार के पास भेज दिया था और उसे केंद्र सरकार से विचार-विमर्श करने के लिए कहा था। सुप्रीम कोर्ट के आदेश के बाद मुख्यमंत्री ने इस प्रस्ताव को मंजूरी दे दी। उच्चतम न्यायालय ने अपने आदेश में कहा कि उपराज्यपाल बाधाकारी नहीं हो सकते और उन्हें निर्वाचित सरकार की सलाह पर काम करना चाहिए।

डीटीयू के दो नए शैक्षिक खंड व तीन नए छात्रावास योजना को मिली ईएफसी से मंजूरी डीटीयू में तीन हजार ज्यादा छात्रों की नामांकन क्षमता बढ़ेगी

रेपिस्ट का गला काटने वाले पर करणी सेना ने किया 25 लाख के इनाम का एलान

जालौन (एजेंसी)। राजपूताना करणी सेना ने एक बार फिर कानून को हाथ में लेने का ऐलान किया है। जालौन जिले के कालपी कस्बे में शुक्रवार को क्षत्रिय सम्मेलन के दौरान राष्ट्रीय राजपूताना करणी सेना के प्रदेश अध्यक्ष वीर प्रताप सिंह ने कहा कि छह साल से कम उम्र की बच्चियों के साथ दुष्कर्म करने वालों का सिर काटने वाले को 25 लाख रुपये का ईनाम दिया जाएगा। राष्ट्रीय राजपूताना करणी सेना के प्रदेशाध्यक्ष वीर प्रताप सिंह ने क्षत्रिय सम्मेलन में संवाददाताओं से कहा, 'देश और प्रदेश में महिलाएं, युवतियां और विशेष कर मासूम बच्चियों के साथ दुष्कर्म की घटनाएं लगातार बढ़ रही हैं, लेकिन सरकारें इन घटनाओं पर रोक लगाने में नाकाम हैं जिससे असुरक्षा की भावना बढ़ती जा रही है।

' उन्होंने कहा, 'छह साल से कम उम्र की बच्चियों के साथ दुष्कर्म करने वाले का सिर काटकर लाने वाले को करणी सेना की तरफ से 20 लाख रुपये और खुद की तरफ से पांच लाख रुपये (कुल 25 लाख) का नकद ईनाम दिया जाएगा। इसके साथ ही सिर काटने वाले की न्यायिक पैरवी का पूरा खर्च करणी सेना उठाएगी।

जेटली ने कहा, 1951 में श्यामा प्रसाद मुखर्जी को ''अखंड भारत' का समर्थन करने से रोकने के लिए संविधान में संशोधन किया गया

मुखर्जी के ''अखंड भारत' के विचार के खिलाफ थे पंडित नेहरू : जेटली

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्रीय मंत्री अरुण जेटली ने शुक्रवार को कांग्रेस पर 1951 में श्यामा प्रसाद मुखर्जी को ''अखंड भारत' का समर्थन करने से रोकने के लिए संविधान में संशोधन करने और हाल ही में ''टुकड़े-टुकड़े' के आह्वान को एक वैधानिक ''बोलने की आजादी' मानने पर निशाना साधा। जेटली ने भारतीय जनसंघ के संस्थापक मुखर्जी की 117वीं जयंती पर अपने फेसबुक पोस्ट में कहा, ''1951 में संविधान में पहला संशोधन और 1963 में 16वें संशोधन ने बोलने की आजादी के अधिकार पर अतिरिक्तशत्रे थोपीं।' जेटली ने कहा कि तत्कालीन प्रधानमंत्री ''अखंड भारत' के विचार के खिलाफ थे, क्योंकि वह सोचते थे कि इससे युद्ध छिड़ सकता है। इस उद्देश्य के लिए मुखर्जी को आगे बढ़ने से रोकने का कोई चारा नहीं देख, नेहरू ने संविधान में पहला संशोधन कर दिया।जेटली ने कहा, ''पहले संशोधन के तहत लगाई गई पाबंदी काफी व्यापक थी। इसने सरकार को वह ताकत दी, जिसके अंतर्गत ''दूसरे देशों के साथ दोस्ताना संबंध बिगड़ने की स्थिति में' बोलने की आजादी को रोकने का अधिकार था।' मुखर्जी संगठित भारत के प्रमुख पक्षधर थे, जिसे वह ''अखंड भारत' कहते थे। जेटली ने कहा, ''अप्रैल 1950 में ''नेहरू-लियाकत समझौते' के हस्ताक्षर होने से दो दिन पहले इसके विरोध में पहले कैबिनेट में उद्योग मंत्री मुखर्जी ने इस्तीफा दे दिया था और ''नेहरू-लियाकत समझौते' पर कड़ा विरोध जताया था।' भाजपा नेता ने कहा, ''नेहरू ने मुखर्जी की आलोचना पर अति-प्रतिक्रिया व्यक्त की थी। उन्होंने अखंड भारत के विचार की व्याख्या एक संघर्ष के रूप में की थी, जिसके अंतर्गत देशों को बिना युद्ध के दोबारा संगठित नहीं किया जा सकता था।'जेटली ने कहा, ''मुखर्जी ने इसके विरोध में दावा किया था कि पाकिस्तान युद्ध चाहता है और जम्मू एवं कश्मीर में हमारे वैधानिक क्षेत्र पर कब्जा करने के लिए पहले से ही युद्ध कर रहा है। इसलिए यह कहना कि अखंड भारत पर उनका भाषण युद्ध को न्योता देगा, स्वीकार्य नहीं है।

' जेटली ने कहा, ''हमारे विधिशास्त्र संबंधी क्रमिक विकास का विरोधाभाष है कि हम उनके लिए अलग मापदंड अपनाते हैं, जो भारत को विखंडित करना चाहते हैं। यह बहस हाल ही में जवाहरलाल नेहरू विविद्यालय में ''टुकड़े-टुकड़े' के आह्वान के दौरान सामने आई थी।'मंत्री ने कहा, ''गत 70 वर्षो में देश ने विभिन्न स्थितियों में बदलाव देखा है, जहां नेहरू संविधान में संशोधन करते हैं, क्योंकि ''अखंड भारत' की मांग युद्ध छेड़ सकती है और इसलिए इस पर रोक लगाई जाती है। इसके ठीक विपरीत, हम सभी को बताया गया कि बिना हिंसा किए देश को तोड़ने वाला बयानदेना कानूनी रूप से बोलने की आजादी है।'

बाल यौन शोषण के खिलाफ लोगों को जागरूक करने का अनोखा अभियान

नई दिल्ली (एजेंसी)। अभी तक आपने दीवारों पर विभिन्न तरह के उत्पादों के विज्ञापन देखें होंगे लेकिन देश की राजधानी दिल्ली और उसका दिल कहें जाने वाले कनाट प्लेस के मिडिल सर्कल की दीवारों पर कुछ ऐसी पेंटिंग देखने को मिलेंगी, जिसे देख कर आप सोचने को मजबूर हो जाएंगे कि हम किस ओर जा रहे हैं। इन तस्वीरों को दो युवा लीना केजरीवाल और अमोग लक्स ने बनाया है। इन दोनों कलाकारों ने अपनी पेंटिंग कैम्पेन के माध्यम से इंडस्ट्री बनते सेक्स अपराधों में बच्चों की बढ़ती डिमांड को दिखाया है। ''द मिसिंग पब्लिक आर्ट प्रोजेक्ट' ने इसके लिए चेंज डाट ओआरजी से हाथ मिलाया है। दोनों कलाकारों ने कनाट प्लेस के मिडिल सर्कल, मालवीय नगर मेट्रो स्टेशन और बसंत कुंज के बी ब्लाक में पेंटिंग्स बनाई हैं। इस पेटिंग्स के माध्यम से यह दिखाने की कोशिश की गई है कि किस तरह से बच्चों का यौन शोषण एक बिजनेस बन गया है, जिसपर आज बहुत हद तक चुप्पी-सी है। इन कलाकारों का कहना है कि वह इस कलाकृतियों के माध्यम से इस मुद्दे पर लोगों की चुप्पी तोड़ना चाहते है।

गोंडा : स्कूल में छात्र कम मिले तो गांव में पढ़ने वाले बच्चों को खोजने लगे विधायक

गोंडा (एजेंसी)। सदर विधायक प्रतीक भूषण शरण सिंह गोद लिए प्राइमरी स्कूल विश्वनागा पहुंचे। वहां उन्होंने हर कक्ष में जाकर बच्चों से संवाद किया। शिक्षकों के प्रयास को सराहा। इसके अलावा एक कक्ष में बच्चे कम देखे और एक गांव के काफी बच्चे स्कूल नहीं पहुंचे थे। इसके बाद विधायक सीधे शेखनचक गांव पहुंच गए और स्कूल न जाने वाले बच्चों को खोजने लगे। विधायक ने देखा कुछ बच्चे पेड़ पर बैठे हुए थे। उन्होंने बच्चों को उतारा। गांव के ममता, लक्ष्मी, कुसमी, अमित, साधना, धर्मेन्द्र, मोहनी आदि मिले जो स्कूल नहीं गए थे। विधायक ने सभी को प्रेरित किया। विधायक ने छबई, राजेश, पुददुन, जोखू, किशुन, दिनेश आदि अभिभावकों से बातचीत की। पता चला कि इन अभिभावकों के बच्चे पढ़ने लायक हैं लेकिन स्कूल में नाम नहीं लिखाया है। विधायक ने सभी का नामांकन कराया। गांव में अचानक विधायक के बच्चों को खोजते देख लोग भौचचके हो गए। लोगों ने खुशी जताई कि शिक्षा के लिए विधायक ने अलग ही अंदाज में दिखे। फिर स्कूल आकर विधायक प्रतीक भूषण सिंह ने एमडीएम भी चखा और शिक्षकों के प्रयास की सराहना की।

स्कूल विकास के लिए पहल :

सदर विधायक प्रतीक भूषण सिंह ने स्कूल के विकास का कार्य भी शुरू कर दिया है। उन्होंने गोद लेने के बाद स्कूल में झूले की सौगात दी थी। अब फर्नीचर दे रहे हैं। यहां के बच्चे अब बेंच पर बैठेंगे। स्कूल में बिजली व फर्श के

उन्नाव : गैंगरेप के आरोपी की पुलिस पिटाई से आहत मां ट्रेन के आगे हो गई खड़ी

उन्नाव(शुक्लागंज) (एजेंसी)। शुक्लागंज में बिधवा से गैंगरेप के मामले में पुलिस ने शुक्रवार देर रात दो और आरोपियों को दबोच लिया। अब तक इस मामले में 7 में से 5 आरोपी दबोचे जा चुके हैं। शेष की धरपकड़ के लिए शनिवार सुबह पुलिस टीम पकड़े गए आरोपियों से सख्ती से पूछताछ कर रही है। इस दौरान एक रितिक नाम का आरोपी पुलिस अभिरक्षा से भागने की फिराक में था, लेकिन उसे पुलिस ने दबोच लिया।

पूछताछ के दौरान बाहर खड़ी उसकी मां ने थाने पहुंचकर पुलिस की मुश्किलें खड़ी कर दी।

बेटे की पिटाई से आहत महिला ट्रेन के आगे खड़ी हो गई। कहने लगी अगर मेरे बेटे को मारोगे तो मैं मर जाऊंगी। पुलिस ने फिलहाल महिला को भी हिरासत में ले लिया है।

शुक्रवार को वीयरल वीडियों ने मचाई थी सनसनी

महिला के साथ जोर-जबरदस्ती के गुरुवार को वायरल वीडियो ने एक बार फिर उन्नाव को सुर्खियों में ला दिया। मामला गंगाघाट कोतवाली क्षेत्र के बाबाखेड़ा गांव का है। यूकेलिप्टस के बगीचे में हुई इस दरिंदगी के वीडियो को चोरी का मामला बताकर पर्दा डालने वाली पुलिस तब सकते में आ गई जब शुक्रवार को पीड़िता ने गैंगरेप का खुलासा किया। उधर, आनन-फानन में कॉफ्रेंस बुलाकर एसपी ने सात लोगों के खिलाफ दुष्कर्म की रिपोर्ट और तीन की गिरफ्तारी की जानकारी दी।

इस मामले में एक नाबालिग किशोर समेत विमल और राहुल को जेल भी भेज दिया गया। देर रात पुलिस ने शेष आरोपियों के घरों में दबिश दी और रितिक और पवन की भी गिरफ्तार किया।

मामले से संबंधित शेष बचे एक आरोपी विपिन की धरपकड़ के लिए पुलिस ने उसके नाते रिश्तेदारों से पूछताछ में जुटी है। पुलिस के मुताबिक विपिन की भी गिरफ्तारी जल्द कर ली जाएगी।

अभिरक्षा से भागे आरोपी को पुलिस ने पकड़ा

पकड़े गए आरोपियों से शनिवार की सुबह अपर पुलिस अधीक्षक अनूप कुमार सिंह से गंगाघाट कोतवाली में पूछताछ कर रहे थे। तभी आरोपी रितिक कोतवाली परिसर से भाग खड़ा हुआ। यह देख पुलिस कर्मियों में हड़कंप मच गया। मौजूद पुलिस कर्मियों ने उसका पीछा कराना शुरू कर दिया। कोतवाली से दो मीटर की दूरी पर दौड़ा कर भाग रहे आरोपी को पुलिस ने पकड़ लिया।

आरोपी के पकड़े जाने के बाद पुलिस ने राहत की सांस ली।

ट्रेन के आगे खड़ी हो गई रितिक की मां

आरोपी रितिक से अपर पुलिस अधीक्षक पूछताछ कर रहे थे तभी कमरे के बाहर मारपीट की आवाज सुनाईं दीं। बाहर खड़ी रितिक की मां जोर-जोर से रोने लगी और बोली मेरे बेटे को मारोगे तो मैं मर जाऊंगी।

पुलिस ने किसी तरह उस को शांत कराया और थाने में ही बैठा दिया। थोड़ी देर बाद महिला गंगा रेलवे स्टेशन की ओर भागी। कानपुर से लखनऊ जा रही है अहमदाबाद गोरखपुर सुपर फास्ट ट्रेन के आगे खड़ी हो गई।

रेलवे क्रॉसिंग पर मौजूद लोगों ने महिला की जान बचाई। घटना से पूरा पुलिस महकमा सकते में आ गया। महिला को पुलिस हिरासत में रखा गया है।

संपादकीय

मास्टर ऑफ रोस्टर

सुप्रीम कोर्ट में 'रोस्टर सिस्टम' यानी जजों को केस आवंटित करने की प्रक्रिया में बदलाव की मांग करने वाली वरिष्ठ वकील शांति भूषण की याचिका को खारिज करते हुए सर्वोच्च अदालत ने स्पष्ट कर दिया है कि चीफ जस्टिस ऑफ इंडिया ही मास्टर ऑफ रोस्टर हैं और उन्हें ही जजों को केस आवंटित करने का अधिकार है। अदालत ने याद दिलाया कि 'पहले के कई फैसलों में यह स्पष्ट किया जा चुका है कि चीफ जस्टिस ऑफ इंडिया ही 'मास्टर ऑफ रोस्टर' होते हैं और विभिन्न पीठों को केस आवंटित करने का अधिकार सिर्फ और सिर्फ उनके पास होता है।' कोर्ट ने यह भी स्पष्ट कर दिया कि प्रधान न्यायाधीश सबसे वरिष्ठ न्यायाधीश होने के कारण अदालती प्रशासन के भी मुखिया होते हैं और केसों का आवंटन इसी प्रशासनिक कामकाज का हिस्सा है। याचिकाकर्ता पूर्व कानून मंत्री शांति भूषण ने केस आवंटन प्रक्रिया पर सवाल उठाते हुए पारदर्शिता की बात की थी और पांच वरिष्ठतम जजों को मिलकर मुकदमों का आवंटन किए जाने की मांग की थी। इस पूरे प्रकरण की शुरुआत उस वक्त हुई, जब सुप्रीम कोर्ट के चार वरिष्ठ जजों ने 12 जनवरी को संयुक्त प्रेस कांफ्रेंस कर अदालती कार्य-प्रणाली से असहमतियां दर्ज कराईं और प्रधान न्यायाधीश पर मनमाने तरीके से मुकदमों का आवंटन करने का आरोप लगाया था। आमतौर पर मीडिया से दूर रहने वाली जमात का इस तरह अपनी बात रखना इसलिए भी सुर्खियां बन गया था कि सुप्रीम कोर्ट के जजों के मामले में यह अपने तरह की पहली घटना थी। दरअसल इसकी पृष्ठभूमि में ओडिशा मेडिकल कॉलेज के एक घोटाले की सुनवाई का मामला था, जिसमें 'मास्टर ऑफ रोस्टर' के सिद्धांत को लेकर पहली बार विवाद उठा और सीबीआई जांच में इसमें ओडिशा हाईकोर्ट के एक पूर्व जज का नाम और न्यायपालिका के उच्च स्तर पर घूस की पेशकश की बातें सामने आई थीं। फैसले के बाद अब यह मान लेना चाहिए कि सर्वोच्च अदालत के कामकाज पर उंगली उठाना या इन्हें सार्वजनिक बहस का मुद्दा बनाना व्यापक हित में नहीं होगा। यह न्यायपालिका की गरिमा के प्रतिकूल तो है ही, भारत जैसे उदार लोकतंत्र के लिए भी उचित नहीं होगा। बेहतर होता कि इस मामले में पहली बार जब अंदर से आवाज उठी, तभी अंदर से इसका समाधान निकला जाता। हालांकि बाद में भी अगर यह मामला बाहर आया, तब भी यह हमारे वरिष्ठतम जजों की व्यापक सरोकार से जुड़ी चिंता के रूप में ही था, न कि निजी दोषारोपण जैसी कोई बात। लोकतंत्र की ताकत ही आवाजों का उठना है। बस जरूरत इन आवाजों और मतभेदों का समय रहते वाजिब समाधान निकालने की है। समय पर समाधान न निकलना भ्रांतियों को जन्म देता है और भ्रांतियां विकृति को। बेहतर होता ये हालात ही न पैदा होते। देर तो अब भी नहीं हुई है। जरूरी है कि सर्वोच्च अदालत के इस फैसले से निकला संदेश न सिर्फ आम अवाम और सत्ता के गलियारों तक, बल्कि न्यायपालिका की निचली कड़ियों तक भी पहुंचे, जहां से सिस्टम के बारे में धारणाएं बनती-बिगड़नी शुरू होती हैं। सर्वोच्च अदालत की कार्य-प्रणाली के बहाने निकले इस विवाद को यहीं भुलाकर आगे के लिए नई नजीर गढ़ने की भी जरूरत है, जो न्यायपालिका के क्षरण पर छिड़ी बहस के इस दौर में हमें पारदर्शी और निष्पक्ष न्याय के प्रति आश्वस्त कर सके।

संवाद ही अंतिम विकल्प

आतंकवादी बुरहान वानी की आगामी आठ जुलाई को बरसी है। सुरक्षा एजेंसियों को वानी की बरसी के मद्देनजर घाटी में हिंसा की साजिश की आशंका है। उसकी बरसी के अवसर पर आतंकवादियों ने वानी के गृह जिले त्राल में बंद की घोषणा की है। दूसरी ओर हुर्रियत के नेताओं ने जनसभा का आयोजन किया है। इसी तरह सैयद सलाहुद्दीन के नेतृत्व वाले यूनाइटेड जेहाद काउंसिल ने भी बंद का ऐलान किया हुआ है। जाहिर है अलगाववादियों का इरादा किसी बड़ी हिंसक घटना को अंजाम देना है। ऐसा माना जा रहा है कि सूबे में किसी बड़ी हिंसा की आशंका को देखते हुए बृहस्पतिवार को गृहमंत्री राजनाथ सिंह का दौरा हुआ था। गृहमंत्री ने अपनी इस यात्रा के दौरान सूबे के सुरक्षा इंतजाम को लेकर समीक्षा बैठक की। इस बैठक के बाद ही राज्य को हाई अलर्ट पर रखा गया है। प्रदेश में किसी तरह की अनहोनी को रोकने के लिए ऐहतियात के तौर पर राष्ट्रीय सुरक्षा एजेंसी (एनआईए) ने अलगवावादी मुस्लिम महिलाओं के समूह दुख्तरान-ए-मिल्लत की मुख्य कर्ता-धर्ता आसिया अंद्राबी और उसकी दो सहयोगियों को 10 दिन की हिरासत में ले लिया है। गौरतलब है कि हिजबुल मुजाहिदीन के पूर्व कमांडर बुरहान वानी को आठ जुलाई 2016 को सुरक्षा बलों ने मुठभेड़ में मार गिराया था। उसके मारे जाने के बाद से घाटी में हिंसा की वारदात थमने का नाम नहीं ले रही है। हालांकि अब राज्य में राज्यपाल का शासन है, लिहाजा उम्मीद की जा रही है कि आतंकवादियों का कोई मंसूबा सफल नहीं होगा। लेकिन एक बात तो तय है कि वहां स्थायी शांति के लिए लोकप्रिय सरकार जरूरी है। राज्य में निर्वाचित सरकार के बगैर हालात सामान्य होना संभव नहीं दिखता। गृहमंत्री राजनाथ सिंह ने इस बात का भी इशारा किया है कि ईमानदार प्रशासन से ही स्थिरता और शांति संभव है। यह मान लेने में कोई संकोच नहीं करना चाहिए कि सूबे में सक्रिय जितने भी राजनीतिक दल हैं, वह सभी अपनी विश्वसनीयता और वैधता खो चुके हैं। इसकी एक बड़ी वजह भ्रष्टाचार भी है, जिससे कोई भी राजनीतिक दल बचा नहीं है। सच तो यह है कि स्थानीय प्रशासन को जनता के प्रति जवाबदेह बनाना होगा। इसके लिएस्थानीय स्वायत्तशासी संस्थाओं को मजबूत और पारदर्शी बनाना बुनियादी शर्त है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने ठीक ही कहा था कि कश्मीर की समस्या का समाधान गोली से नहीं संवाद से निकलेगा। इस दिशा में केंद्र सरकार को पहल करने की जरूरत है।

कटाक्ष/ कबीरदास

आंकड़े हैं, आंकड़ों का क्या?

पीएम जी ने अब तो मुंह खोलकर भी कह दिया कि देश में कमी रोजगार की नहीं है। कमी रोजगार के आंकड़ों की है। रोजगार आगे जा रहा है, पर आंकड़ा उसे पीछे खिसकता दिखा रहा है। और पब्लिक आंकड़ा देख-देखकर कन्फ्यूज हुए जा रही है। पर, पब्लिक का यह कन्फ्यूजन दूर करने के लिए हमें भी तो कुछ करना चाहिए। रोजगार दिलाने से लेकर, उसकी गिनती कराने तक, एक बेचारा पीएम सब कुछ कैसे करेगा?एक 22-24 का नौजवान मिला। हाव-भाव से पढ़ा-लिखा सा लगता था। सोचा भ्रम दूर कर दूं। बधाई दी-चलिए रोजी-रोटी की चिंता मिटी, अब आप बारोजगार हैं। उसने चौंककर पूछा-आप रोजगार दे रहे हैं? अब मेरी चौंकने की बारी थी। मैं रोजगार कैसे..मैं तो बस रोजगार के मामले में तुम्हारा भ्रम दूर करना चाहता था। उसने कुछ तीखे सुर में पूछा-यानी? मैंने कहा-यही कि तुम बेरोजगार नहीं हो, तुम्हारे पास रोजगार है। उसने अब व्यंग्य से कहा-कमाल है, सब को पता है और मुझे ही नहीं पता है कि मेरे पास रोजगार है! व्यंग्य का तीर भी मेरे जोश की हवा नहीं निकाल पाया। मैं बिना मांगे समझाने लगा-सारी गड़बड़ी आंकड़ों की है। वे रोजगार को छुपा रहे हैं और बेरोजगारी का भ्रम फैला रहे हैं। अब उसने चिढ़कर कहा-तो समझ लो कि मेरा रोजगार भी आंकड़ों ने ही छुपा लिया। मुझसे भी छुपा लिया। जाहिर है मैं इसके लिए तैयार नहीं था। फिर भी आखिरी कोशिश करते हुए मैंने टोका-तुमसे तुम्हारा रोजगार कोई आंकड़ा कैसे छुपा सकता है? उसने भी स्वर नरम करते हुए कहा-यही तो मैं भी कह रहा हूं। आंकड़ा कहे या न कहे, मेरे जैसे करोड़ों के पास रोजगार नहीं है। वो वादा कर के भूल गए। आखिर में पीएमओ के लिए एक सलाह। अगर एक आंकड़ा रोजगार को छुपा सकता है, तो दूसरा आंकड़ा रोजगार को बढ़ा भी सकता है। रोजगार जुटाने के पीछे भागने की क्या जरूरत है; एक अच्छा सा आंकड़ा जुगाड़ लीजिए, प्राब्लम खुद हल हो जाएगी। या इस आंकड़े का भी टंटा ही खत्म कर दें, हमेशा के लिए। न रहेगा आंकड़ा, न बेरोजगारी का शोर होगा।

कर्नाटक के विनाश की नई राह

रामचंद्र गुहा प्रसिद्ध इतिहासकार

यह 1989 की बात है जब मैं शिवराम कारंथ से उनके दक्षिण कर्नाटक स्थित गांव सालिग्राम में मिला था। आधुनिक कन्नड़ उपन्यास के जनक, यक्षगान जैसे प्राचीन नृत्य नाटक का पुनर्पाठ प्रस्तुत करने वाले, विधवा विवाह और स्त्री शिक्षा को बढ़ावा देने वाले शिवराम कारंथ उन दिनों अपने प्यारे पश्चिमी घाटों को विनाश से बचाने की मुहिम में जुटे थे। 80 साल की उम्र में भी वे खासे सक्रिय रहकर साथी कन्नड़िगाओं को अपनी प्रचुर प्राकृतिक संपदा के प्रति सचेत कर रहे थे।

बाद में मैंने भी कई बार अप्रतिम हरियाली वाले मालनाद के इन घाटों को करीब से देखा, जो कोंकन तटरेखा के पश्चिम में स्थित है। शिवराम कारंथ की ही प्रेरणा से विज्ञान की पढ़ाई का जनोन्मुख इस्तेमाल करने वाले पारिस्थितिकी विज्ञानी माधव गाडगिल के साथ ने इन यात्राओं को और महत्वपूर्ण बना दिया। गाडगिल ने अपना अधिकांश जीवन घाटों के इर्द-गिर्द बसे लोगों की आजीविका सुरक्षा और पर्यावरणीय स्थिरता के प्रति समर्पित कर दिया था। हाल ही में शिवमोग्गा जिले के सागर तालुका में चल रहे अद्भुत सांस्कृतिक रचनात्मकता वाले केंद्र निनासम के भ्रमण के दौरान अतीत का बहुत कुछ फिर से जीवंत हो गया। निनासम सागर के हेगोडू गांव में चल रहा है।

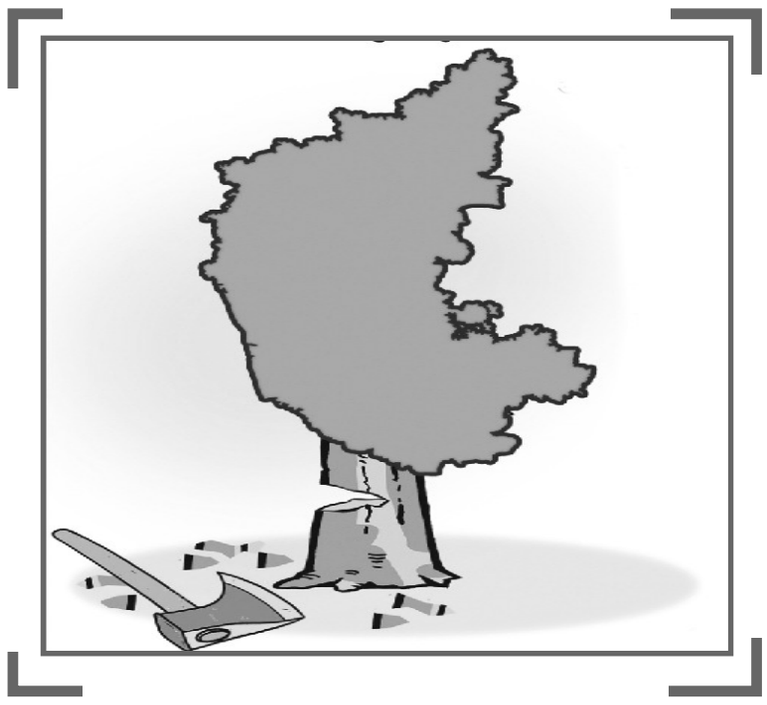

कर्नाटक के तमाम इलाके वास्तुकला और संस्कृति के मामले में समृद्ध हैं, लेकिन प्राकृतिक सौंदर्य के लिए तो पश्चिमी इलाका हमेशा से अप्रतिम रहा है। आगे कितने दिन रह सकेगा, कहना मुश्किल है। मैं दशकों से अगर मालनाद के घाटों की महिमा, इनके सौंदर्य का साक्षी रहा हूं, तो इंसानी फितरत से इसकी बर्बादी भी देख रहा हूं। इधर तो विनाश जैसे सामने ही दिख रहा है। चित्रदुर्गा से धर्मास्तल फोरलेन के नाम पर कम से कम 50 हजार पेड़ कटने जा रहे हैं तो तीन और राजमार्गों की तैयारी है जो लाखों पेड़ों के साथ ही तमाम पहाड़ियों को नष्ट करने का जरिया बनकर भारी पर्यावरणीय नुकसान करेगा।

> बेंगलूरू की तात्कालिन जरूरतें पूरी करने के लिए प्रकृति के साथ कोई भी अनाचार कर्नाटक के लिए विनाशकारी ही होगा।

इन परियोजनाओं पर सवाल उठने लगे हैं। लोग मानते हैं कि सड़कें और राजमार्ग जरूरी हैं, लेकिन इसके लिए रेलमार्ग जैसे अन्य विकल्पों पर भी विचार होना चाहिए? बेंगलुरू को पानी देने के नाम पर भी कई विनाशकारी योजनाएं सामने हैं। येतिनहोल जैसी परियोजना तो नेत्रावदी नदी का प्रवाह ही बदलकर रख देगी। इसके प्रोमोटर पश्चिमी घाटों से विशाल पाइपों के जरिए बेंगलूरू तक पानी लाने का मंसूबा भी पाले हैं। यह पूरी प्रक्रिया किस तरह लाखों पेड़ों की बलि लेंगी,सहज कल्पना की जा सकती है।

येतिनहोल परियोजना तो खैर फिलहाल वैज्ञानिक जांच के दायरे में है, लेकिन राज्य की नई जेडीएस-कांग्रेस सरकार एक अजीबोगरीब योजना का ताना-बाना बुन रही है, कि बेंगलूरू के लिए पश्चिमी नदी शरवथी का पानी लाएगी। स्वाभाविक है यह पानी लिंगानमाकी जलाशय से आएगा, जो राजधानी से पूरे 425 किलोमीटर दूर है और मूल रूप से बिजली परियोजना के तौर पर जाना जाता है। यह बेंगलूरू के लिए कितना कारगर होगा, बाद की बात है लेकिन इतना तो तय है कि यह मालनाद के लोगों पर भारी पड़ेगा, क्योंकि ऐसा करने से जलाशय में पानी कम होगा जिसका असर लिंगानमाकी के बिजली उत्पादन पर पड़ेगा।

अकारण नहीं है कि ऐसी बीमार कल्पनाएं प्रकृतिप्रेमियों को भी डरा रही हैं। वे इसे वन्य जीवन के लिए बड़ा खतरा मान रहे हैं, क्योंकि इस तरह वनों की अंधाधुंध कटाई से तो बाघ, हाथी, जंगली भैंसे और कोबरा जैसे पहले से ही लुप्तप्राय प्रजातियां और बड़े संकट में घिर जाएंगी। सामाजिक न्याय के पक्षधरों को भी समझना चाहिए कि किस तरह बेंगलूरू को एक और सिंगापुर बनाने की यह खामख्याली लाखों किसानों, मछुआरों, चरवाहों और कारीगरों-हस्तशिल्पियों की आजीविका खतरे में डाल देगी और तब शायद उनके करने के लिए बहुत कुछ शेष नहीं रहेगा।

कुछ सवाल नागरिकों को भी सरकार से करने चाहिए। पूछना चाहिए कि बेंगलूरू को पानी के लिए शहर की लुप्तप्राय झीलें क्यों नहीं पुनर्जीवित की जा सकती हैं? उन विशाल बंगलों और दफ्तरों से पानी के लिए ज्यादा शुल्क क्यों न वसूला जाना चाहिए, जो अपनी हरियाली और धुलाई के नाम रोज अथाह पानी बहाते हैं? ऐसा क्यों है कि ग्रामीण आबादी की पानी की जरूरतें कभी प्राथमिकता में नहीं रहीं?

पर्यावरण स्थिरता और सुसंगत आर्थिक विकास के लिए कर्नाटक के पास अकूत प्राकृतिक और बौद्धिक संपदा है। इसके पास भारतीय विज्ञान संस्थान जैसा देश का बेहतरीन विश्वविद्यालय है, तो देश में पर्यावरण अनुसंधान के दो सबसे अच्छे संस्थान- पारिस्थितिक विज्ञान केंद्र और अशोका पारिस्थितिकी व पर्यावरण ट्रस्ट यहीं हैं। शहरी अध्ययन के लिए ख्यात देश का एकमात्र उन्नत केंद्र भारतीय मानव संसाधन संस्थान भी यहीं है।

सच है कि पानी, बिजली, ऊर्जा, परिवहन और शहरी विकास संबंधी सतत नीतियां बनाने में वैज्ञानिकों-विशेषज्ञों की बड़ी भूमिका है लेकिन सरकार तो इनकी सुनने से रही। भाजपा हो या कांग्रेस-जेडीएस, कर्नाटक के किसी राजनेता का ऐसे सोच से कभी कोई सरोकार नहीं रहा, भले ही इतने काबिल लोग उनके अपने घर में ही क्यों न हों।

अभी तमाम राष्ट्रीय चैनल दिल्ली में पेड़ों की संभावित कटाई पर रूदन करने दिखे थे। क्या कर्नाटक में उन लाखों पेड़ों की कटाई भी इन खबरिया चैनलों का ध्यान उसी तरह आकर्षित करेगी, जो कथित विकास के नाम पर यहां तयशुदा दिख रहा है? मैं यह सवाल इसलिए नहीं पूछ रहा हूं कि यह मेरे राज्य का मामला है। यह सवाल इसलिए भी जरूरी है कि यह पश्चिमी घाटों से संबंधित है, यानी सीधे-सीधे हिमालय पर्वत श्रृंखला यानी हमारे गणतंत्र के आर्थिक और सांस्कृतिक जीवन के लिए महत्वपूर्ण है।

सौभाग्य से कुछ युवा कन्नड़िगाओं को आज भी शिवराम कारंथ की भावनाओं का खयाल है। यह आलेख भी 'पश्चिमा घाट जागृति वेदिका' के सदस्यों की जमीनी सूचनाओं पर आधारित है। जरूरी है कि इन कार्यकर्ताओं की चिंताएं राज्य के अन्य हिस्सों में भी पहुंचें। बेंगलुरू की अल्पकालिक जरूरतें पूरी करने के लिए प्रकृति के साथ ऐसा अनाचार, कर्नाटक के लिए विनाशकारी ही होगा।

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

अर्थ मंत्र

दांव पर जीवन सुरक्षा का भरोसा

नित्येन्द्र द्विवेदी

बीमा क्षेत्र में 49 फीसदी एफडीआई, 36 करोड़ पॉलिसी, 12 से 15 प्रतिशत की सालाना बढ़त, लगभग 60 बिलियन डॉलर का कारोबार, जीवन बीमा में 24 राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय खिलाड़ियों की प्रतिस्पर्धा और उनमें 25 लाख करोड़ रुपये के टर्नओवर के साथ लाइफ इंश्योरेंस कॉरपोरेशन (एलआईसी) नंबर वन है। देश की जनता को 'जीवन के साथ भी और जीवन के बाद भी' और 'योगक्षेमं वहाम्यहम?' का भरोसा देने वाली लाइफ इंश्योरेंस की सबसे बड़ी कंपनी हर साल 20 लाख पॉलिसी जारी करती है। इस पर देश के 25 करोड़ लोगों के भविष्य और 30 करोड़ पॉलिसी की जिम्मेदारी है। करीब 3 लाख करोड़ का वार्षिक प्रीमियम इसे प्राप्त होता है।

जीवन बीमा कारोबार में इसके रुतबे का अंदाजा 1,34,551.68 करोड़ रुपये का आंकड़ा है जो उसे वित्त वर्ष 2018 में फर्स्ट ईयर प्रीमियम (एफवाईपी) के रूप में हासिल हुआ। लेकिन शायद 1956 में अपने अस्तित्व में आने के बाद पहली बार इस भरोसे पर संकट के बादल मंडराते दिखायी दे रहे हैं और इस संकट का कारण भी इसके भरोसे का सबसे बड़ा आधार है यानी भारत सरकार।

एलआईसी पर पूरा का पूरा बैंक खरीदने का दबाव है। बैंक भी ऐसा कि जो कई सालों से अपने घाटे और एनपीए की समस्या से जूझ रहा है। बैंकिंग क्षेत्र के विशेषज्ञ उसे बंद करने की सलाह दे रहे हैं। बैंक का नाम है आईडीबीआई। रेटिंग और रिसर्च एजेंसी फिच ने हाल ही में आईडीबीआई बैंक की रेटिंग घटायी है। घाटों और बुरे कर्जों में फंसे उस बैंक को सरकार विगत 2 सालों से निजीकृत करने की कोशिश कर रही है। बैंक ने इस वित्त वर्ष का अंत 8,237.92 करोड़ रुपये के घाटे के साथ किया। मौजूदा समय में आईडीबीआई बैंक में केन्द्र सरकार की हिस्सेदारी 85 फीसदी, बाजार पूंजीकरण करीब 23,000 करोड़, रीयल एस्टेट परिसंपत्तियों और निवेश पोर्टफोलियो लगभग 20,000 करोड़ रुपए है।

बैंकों की पुनरुत्थान योजनाओं के तहत सरकार बार-बार सरकारी बैंकों के लिए बेलआउट पैकेज लेकर आती है। हजारों करोड़ रुपये का बजट निर्धारित किया जाता है। वह सारा पैसा टैक्सपेयर्स का होता है। लेकिन बैंकों की स्थिति सुधरने का नाम नहीं लेती। विशेषज्ञ अब बैंकिंग क्षेत्र की तुलना ब्लैक होल से करने लगे हैं। इसमें चाहे जितना पैसा डालो वह बिना किसी रिटर्न के जाने कहां चला जायेगा, इसका पता भी नहीं चलता।

केंद्र सरकार द्वारा संचालित की जाने वाली लाइफ इंश्योरेंस कॉरपोरेशन को आईडीबीआई बैंक की 43 प्रतिशत हिस्सेदारी खरीद की मंजूरी मिल गयी है। इसके 8 प्रतिशत स्टाक इस बैंक में पहले से है। इसके बाद आईडीबीआई बैंक में एलआईसी की हिस्सेदारी 51 प्रतिशत हो जायेगी। राजस्व के लिहाज से बैंक में एलआईसी को इस हिस्सेदारी को खरीदने के लिए 10,500 करोड़ रुपयों का निवेश करना पड़ेगा और इसकी कुल हिस्सेदारी 13000 करोड़ रुपये से अधिक हो जायेगी।

चाहे सरकारी निर्माण कंपनी एनबीसीसी के ऑफर फॉर सेल (ओएफएस) में 1200 करोड़ की हिस्सेदारी खरीदने का मामला हो या हिंदुस्तान कॉपर के ओएफएस में 250 करोड़ के शेयर खरीदने का, एलआईसी शुरुआत से ही सरकार की विनिवेश योजनाओं की लाइफलाइन बनी हुई है। कमाल की बात तो यह है कि एलआईसी को तमाम निवेश सरकार के दबाव में करने होते हैं।

सरकारी क्षेत्र के सबसे बड़े बैंक एसबीआई के शेयरों में गिरावट की वजह से एलआईसी अभी 5000 करोड़ रुपये से ज्यादा के नुकसान में है। घोटाले में अपनी 43 प्रतिशत मार्केट वैल्यू लुटवा चुके पीएनबी में एलआईसी की 12000 करोड़ की शेयर होल्डिंग है। बैंक ऑफ इंडिया और एनटीपीसी के शेयर एलआईसी के खरीद भाव से क्रमशः 38 और 7 प्रतिशत नीचे चल रहे हैं। इस वजह से एलआईसी 1000 करोड़ रुपये के नुकसान में है। इसके अलावा कॉरपोरेशन बैंक और एसबीआई के शेयरों में गिरावट की वजह से एलआईसी को 700 करोड़ से अधिक का नुकसान है।

आईडीबीआई बैंक में एलआईसी 13000 करोड़ रुपये का निवेश करेगी। बड़ी बात यह है कि इतना बड़ा निवेश करने के बाद भी यह मर्जर या एक्विजेशन (अधिग्रहण) नहीं है। इसे सिर्फ एक रणनीतिक निवेश कहा जा रहा है। आईडीबीआई बैंक का नियंत्रण उसके मैनेजमेंट के पास ही रहेगा। अगर इस बैंक का मैनेजमेंट एलआईसी अपने हाथ में ले भी ले तो एलआईसी के पास बैंक को चलाने का अनुभव नहीं है।

दूसरी बात यह है कि एलआईसी जो धन इसमें निवेश करेगा, वह उसके पॉलिसी होल्डर का पैसा है। नुकसान होने की स्थिति में एलआईसी का बीमाधारक इससे प्रभावित हो सकता है। बैंकिंग विशेषज्ञ इस डील को किसी के लिए भी फायदेमंद नहीं मान रहे हैं। अगर योजना फ्लॉप हुई तो एलआईसी और उसके पॉलिसीधारकों के बीच का रिश्ता समाप्त भले ही न हो लेकिन डगमगा जरूर सकता है।

मुद्दा

संवेदनाओं को नकारता समाज

डॉ. विशेष गुप्ता

दिल्ली के बुराड़ी इलाके में एक ही परिवार के ग्यारह लोगों की मौत की घटना ने देश को झकझोर कर रख दिया। अतीत में सामाजिक व आर्थिक कारणों से सामूहिक मौतों की घटनाएं देखने व सुनने को मिलती रहीं हैं। परन्तु अवलोकन बताते हैं कि भाटिया परिवार तो अच्छा मध्यमवर्गीय कारोबारी खाता-पीता परिवार था। आर्थिक परेशानी भी नहीं थी। पड़ोसियों द्वारा परिवार के सदस्य धार्मिक प्रवृत्ति के साथ बहुत विनम्र बताए गए हैं। अचानक ऐसा क्या हुआ कि तीन पीढ़ियों के ग्यारह सदस्यों को सामूहिक आत्महत्या करनी पड़ीं? यह संपूर्ण घटनाक्रम एक दिन और एक रात में घटित नहीं हो सकता। यह घटना चाहे धार्मिक रूप से अंधविासी अथवा मोक्ष प्राप्ति के लिए ही क्यों न हो, निश्चित ही यह सालों की एकाग्रचित साधना का परिणाम है। दूसरे पड़ोसी और रिश्ते-नातेदारों का इस परिवार से पूरी तरह से अनजान होना शर्तिया समाज की अंदरूनी दरकती दीवारों की ओर इशारा करता है। इसके साथ-साथ अब जिन घटनाओं के उदाहरण मैं देने जा रहा हूं, ये घटनाएं भले ही अपने स्वभाव से एकल हों, परन्तु सभी समाज में लगातार बढ़ती संवेदनशून्यता की ओर इशारा कर रहीं हैं। आपको याद होगा कि पिछले दिनों कई पेशेवर लोगों ने खुद अपनी जीवनलीला समाप्त कर लीं। उनमें पहले अपनी बहादुरी और काबिलियत के लिए जाने वाले महाराष्ट्र के आईपीएस अधिकारी हिमांशु राय हैं। इसके अलावा यूपी के एक अपर पुलिस अधीक्षक राजेश साहनी ने भी गोली मारकर आत्महत्या कर ली। लखनऊ के ही ''यूपी100' के दरोगा ने ड्यूटी से लौटकर अपनी लाइसेंसी बंदूक से गोली मारकर खुदखुशी कर ली। मुबंई के ही एक 24 वर्षीय प्रबंधन के एक पेशेवर छात्र अजरुन भारद्वाज ने होटल की 19वीं मंजिल से कूदकर आत्महत्या कर ली। पिछले ही दिनों गुड़गांव के रेयान स्कूल की घटना में एक नाबालिग छात्र का अपने साथी की हत्या, बेटे को पढ़ाई के लिए डांटने पर मां और बहन की हत्या जैसी घटनाएं आज लगातार समाज को अंदर से झकझोर रहीं हैं। ये तो अभी केवल हाल की ही कुछ घटनाएं हैं। आज परिवार व विवाह के ढांचे की दरकती दीवारें, रक्त संबंधों में लगातार टूटन और रातों-रात लोगों के सफल होने का जुनून जैसे कारण इस पेशेवर समाज में बदलाव की तेज रफ्तार को महसूस करा रहे हैं। वर्तमान की इस सच्चाई को प्रस्तुत करने में कोई हिचक नहीं कि तकनीकी शिक्षा, पूंजी, बाजार, सूचना तकनीकी के साथ में सोशल मीडिया जैसे कारकों के फैलाव के सामने परिवार, समुदाय से बनने वाले सामाजिक रिश्ते बौने नजर आ रहे हैं। सही बात यह है कि तेजी से भागती जिंदगी में सामाजिक रिश्तों के अहसास से बनने वाले समाज में अब यह बहस चल पड़ी है कि क्या सामाजिक और सामुदायिक रिश्तों में और कड़वाहट बढ़ेगी? क्या भविष्य पेशेवर समाज में विवाह और परिवार का सामाजिक-वैधानिक ढांचा बच पाएगा अथवा इनका पूरी तरह कायापलट हो जाएगा? क्या समाज को अब सूचना तकनीक से जुड़े आभासी समाज पर ही निर्भर रहना होगा? क्या भविष्य में परिवार की एकलता ही जीवन की सच्चाई बनकर उभरेगी अथवा इनमें भी अभी और टूटन बढ़ेगी? अगर हम यह मानते हैं कि यह दौर तेजी से बदलते समाज का दौर है तो फिर यहां सवाल यह भी है कि क्या इन रिश्तों की टूटन को बदलाव की स्वाभाविक प्रक्रिया समझा जाए या इसे नये नियंतण्र समाज का दबाव मानकर चलना बेहतर होगा? ऐसे ज्वलंत सवालों के जवाब हमें भारतीय समाज के दायरे में ही खोजने होंगे। आजादी के आंदोलन के बाद हमारी पुरानी पीढ़ी ने जिन मूल्यों और आदशरे के साथ सामाजिक रिश्तों को परिवार के संयुक्त सांचे में ढाला, पूंजी के विस्तार, बाजार की आक्रामकता और व्यक्ति के रातो-रात सफल होने की महत्वाकांक्षाओं ने उसे एक ही पल में बिखेर कर रख दिया। इन रिश्तों के टूटन की खनक आज समाज में साफ सुनाई दे रही है। अवलोकन बताते हैं कि आज हर रिश्ता एक तनाव के दौर से गुजर रहा है। वह चाहे माता-पिता का हो या पति-पत्नी का, भाई-बहन, दोस्त या अधिकारी व कर्मचारी का ही रिश्ता क्यों न हो, इन सभी के बीच एक शीत भाव पनप रहा है। ध्यान रहे सामाजिक रिश्ते निरंतर संवाद की मांग करते हैं। देर-सवेर समाज में बढ़ता धन का प्रभाव, छद्म तरक्की की होड़ व सोशल मीडिया के प्रभाव से बढ़ता सामाजिक अकेलापन थोड़ा परेशान जरूर कर सकता है। परन्तु इससे घबराने की आवश्यकता नहीं है। आपसी रिश्तों के सघन संवाद के बढ़ने से न केवल भारतीय परिवारों की नींव मजबूत होगी, बल्कि इससे भविष्य में देश के सामाजिक व सांस्कृतिक ताने-बाने को भी मजबूती मिलेगी।

सार समाचार

दुनिया से गायब होने के कगार पर केला

लंदन (एजेंसी)। अगले कुछ सालों में बड़ी संख्या में लोगों का पसंदीदा फ्रूट केला दुनिया से गायब हो सकता है। वैज्ञानिकों ने चेतावनी दी है कि एक संक्रमण तेजी से फैल रहा है जो केले को लुप्त कर सकता है।

क्या है पनामा डिजीज

क्यू स्थित रॉयल बोटैनिक गार्डन्स में सीनियर कंजरवेशन एसेसर रिचर्ड एलन ने कहा कि केलों में एक तरह के फफूंद का संक्रमण फैल रहा है। इसे प्लांट बायोलॉजिस्ट ने पनामा डिजीज नाम दिया है। इस बीमारी के कारण 1950 में बिग माइक नाम की केलों की प्रजाति विलुप्त हो चुकी है। यह बीमारी पेड़ की जड़ों में हमला करती है।

कई देशों में पहुंच चुकी है बीमारी

यह बीमारी फिलहाल एशिया, अफ्रीका, मध्य पूर्व एशिया और ऑस्ट्रेलिया की केलों की प्रजातियों में फैल चुकी है। दक्षिण अमेरिका दुनिया में केलों का सबसे बड़ा आपूर्तिकर्ता है। रिचर्ड का कहना है कि पनामा डिजीज अगर दक्षिण अमेरिका पहुंच गई तो केलों की सबसे लोकप्रिय प्रजाति कैवेंडिश बनाना विलुप्त हो जाएगा।

रासायनिक छिड़काव साबित हो रहा बेअसर

विशेषज्ञों की बड़ी चिंता यह है कि केलों में फैली इस बीमारी पर रसायनों का छिड़काव भी बेअसर साबित हो रहा है। फंगल इनफेक्शन को आगे फैलने से रोकने के लिए बीमारी वाले केले की उपज को अलग?-थलग करने के अलावा और कोई रास्ता नहीं है।

मैडागास्कर में पाई जाने वाली प्रजाति से जगी उम्मीद

कैवेंडिश केला आनुवांशिक रूप से एक दूसरे के समान होता है। इस कारण इनमें पनामा डिजीज फैलने की आशंका अधिक है। इस बीमारी से बचने का एकमात्र रास्ता मैडागास्कर में पाई जाने वाली केले की प्रजाति से मिल सकता है। इस प्रजाति के केले सख्त होते हैं और इन पर पनामा डिजीज का असर नहीं होता है। देखा जाए तो यह केलों की जंगली प्रजाति है।

हाईब्रिड तैयार करने में जुटे वैज्ञानिक

अब वैज्ञानिक इस उम्मीद में केले की दो प्रजातियों का हाईब्रिड तैयार करने की कोशिशों में लगे हैं कि इसमें इन घातक बीमारियों की प्रतिरोधक क्षमता हो। मैडागास्कर द्वीप पर पाए जाने वाले केलों की प्रजाति में यहां के मौसम के कारण सूखा और अन्य बीमारियों से लड़ने की क्षमता है। इसलिए मुमकिन है कि यह पनामा डिजीज के प्रति भी बेसर हों।

जल्दी खत्म होने वाली बीमारी नहीं पनामा डिजीज

विशेषज्ञों का कहना है संक्रमण को रोकने के लिए बीमारी वाली पैदावार के क्षेत्र को अलग?-थलग करना तात्कालिक उपाय तो हो सकता है, मगर यह समस्या का समाधान नहीं है। संक्रमण के अंश मिट्टी में सुप्तावस्था में मौजूद रहेंगे और परिस्थिति अनुकूल मिलते ही फिर फैलने लगेंगे।

दुनिया में सालाना 10 करोड़ से ज्यादा है केले की पैदावार

दुनिया के 120 देशों में इसका उत्पादन होता है। केले की सालाना पैदावार लगभग 10 करोड़ टन है। लेकिन जिस तेजी से बीमारियां उसे अपना शिकार बना रही हैं, उससे आने वाले कुछ वर्षों में केले के गायब होने का खतरा उत्पन्न हो गया है।

20 सालों में आसमान में बढ़ जाएगी विमानों की संख्या, होगी दोगुनी से अधिक

नई दिल्ली। आगामी 20 वर्षों में आसमान में विमानों की संख्या काफी तेजी से बढ़ने जा रही है। एयरबस द्वारा ग्लोबल मार्केट फॉरकास्ट में जानकारी दी गई है कि साल 2037 तक आसमान में उड़ने वाले विमान दोगुने हो जाएंगे। विमान निर्माता का कहना है कि आने वाले 20 सालों में अभी उड़ान भरने वाले 21450 विमानों के आधे हवा में उड़ते रहेंगे। वहीं, 37,390 नए विमानों की संभावना और है। इसके साथ ही कुल संख्या 123 फीसदी बढ़कर 47990 हो जाएगी। नए विमानों में ज्यादातर छोटे, कम चौड़ी बॉडी वाले जेट्स शामिल होंगे। पहली बार इसने 70 साल पहले उड़ान भरी थी।

लगाने नहीं, खाने के लिए हैं

कॉस्मैटिक्स थीम की डिशेज...चीन के प्रांत शांक्सी के शहर जियान के एक रेस्त्रां में महिलाओं के लिए खासतौर पर कॉस्मैटिक्स डिशेज शुरू की गई हैं। महिला कस्टमर्स को आकर्षित करने के लिए लिपस्टिक और स्कि नकेयर प्रोडक्ट्स की शेप में बनी ये डिशेज काफी पसंद भी की जा रही हैं।

इस देश के राष्ट्रपति ने कहा

ईश्वर के साथ दिखाओ सेल्फी दे दूंगा इस्तीफा

मनीला (एजेंसी)। फिलिपींस के राष्ट्रपति दुतेर्ते को लगता है विवादों में रहना काफी पसंद है। हाल ही में ईश्वर के ऊपर विवादित टिप्पणी करने के कारण भारी विरोध का सामना करने के बावजूद अब उन्होंने एक और बड़ा बयान दे डाला है। उन्होंने हाल ही में कहा है कि अगर किसी ने ये सिद्ध कर दिया कि दुनिया में ईश्वर का अस्तित्व है तो वह अपने पद से इस्तीफा दे देंगे। फिलिपींस रोमन कैथोलिक देश है और यहां इस तरह के बयान से काफी हंगामा खड़ा हो जाता है। इस बयान के बाद उन पर आलोचनाओं की बाढ़ आ गई है। विरोधी खेमे के लोग उन्हें निरंकुश, पत्थर दिल और कठोर करार दे रहे हैं। हालांकि राष्ट्रपति के प्रवक्ता हैरी रोके ने

बाद में दुतेर्ते के बयानों का बचाव करते हुए कहा कि उन्हें धर्म के ऊपर अपने विचारों को अभिव्यक्त करने का पूरा अधिकार है। दुतेर्ते के बयानों के बाद मनीला में एक सालाना बैठक बुलाई गई है, जिसमें इन मुद्दों पर चर्चा की जाएगी। गौरतलब है कि शुक्रवार को एक समारोह में अपने भाषण में उन्होंने कथित तौर पर कैथोलिक मान्यताओं और बुनियादी सिद्धांतों पर सवाल खड़े किए थे। इस दौरान उन्होंने ईश्वर के अस्तित्व पर भी सवाल खड़े कर दिए। उन्होंने पूछा कि- इसका क्या सबूत है कि ईश्वर है, इसका क्या तर्क है? वे दक्षिणी दवाओ शहर के साइंस एंड टेक्नोलॉजी इवेंट की संबोधन सत्र में बोल रहे थे। बताया जाता है कि दुतेर्ते के चर्च के साथ शुरू से ही कड़वे संबंध रहे हैं। उन्होंने कहा कि अगर कोई मनुष्य ये सिद्ध कर देगा कि ईश्वर दुनिया में हैं तो वे तत्काल अपने पद से इस्तीफा दे देंगे। उन्होंने कहा कि सबूत के तौर पर उस मनुष्य को ईश्वर के साथ कोई फोटो या सेल्फी लेकर आना होगा। ताकि यह पता चल सके कि हां, मनुष्य भी ईश्वर से संपर्क कर सकता है, उनसे बात कर सकता है।

चीन में 32 घंटे ब्रेन ट्यूमर की सर्जरी के बाद थक कर लेट गए डॉक्टर

बीजिंग (एजेंसी)। चीन के फुजियान मेडिकल कॉलेज में हाल ही में ब्रेन ट्यूमर की सर्जरी की गई। तकरीबन 32 घंटे तक चली इस सर्जरी में डॉक्टर इस कदर थक गए कि ऑपरेशन थिएटर की फर्श पर लेट गए।

डॉक्टरों ने एक व्यक्ति के सिर में मौजूद खतरनाक ट्यमर को निकालने में सफल रहे।

इस सर्जरी के दौरान डॉक्टरों ने कुछ छोटे-छोटे ब्रेक लिए। इस सर्जरी के दौरान सर्जन को छह एनेस्थेलॉजिस्ट्स और आठ नर्सों की मदद मिली। इस सर्जरी में शामिल डॉक्टर चेन जियानपिंग कहते हैं कि यह मैराथन प्रक्रिया सर्जरी के लिए जरूरी थी क्योंकि इन सभी ट्यूमर्स को एक साथ निकाला जाना जरूरी था। सर्जरी के बाद विक्ट्री साइन बनाते हुए जमीन पर लेटे हुए इन डॉक्टरों की फोटो ट्विटर और फेसबुक पर वायरल हो रही है। डॉक्टर चेन ने बताया कि मरीज के दिमाग तक आने वाली धमनी में खराबी यानी ऐन्यरिज़्म और हिमनेगिओब्लास्टोमा भी था। ऐसे मे इन दोनों ट्यूमर्स को एक ही सर्जरी में निकाला जाना जरूरी थी। इस तरह की सर्जरी के लिए अहम छह अलग-अलग प्रक्रियाओं को पूरा करना जरूरी था। यह काफी मुश्किल था और इसमें समय भी काफी लगता है। उन्होंने कहा कि इस बात का ध्यान रखना बहुत जरूरी था कि एक भी ट्यूमर को निकालते समय अगर दूसरा टूट गया तो यह काफी खतरनाक हो सकता था। जिस समय सर्जरी चल रही थी, उस समय हॉस्पिटल के स्टाफ और मरीज के परिवार वालों को चिंता सता रही थी कि अगर सर्जरी सफल नहीं हुई तो फिर क्या होगा लेकिन डॉक्टरों ने उनकी आशंकाओं को गलत साबित कर दिया।

भारतीय मूल के अमूल थापर अमेरिका स्ट के जज की दौड़ से बाहर, ट्रंप की पसंदीदा लिस्ट में नहीं बना पाए जगह

वॉशिंगटन **(एजेंसी)।** भारतीय अमेरिकी न्यायाधीश अमूल थापर सुप्रीम कोर्ट के जज बनने की दौड़ से बाहर हो गए हैं। वह उन अंतिम तीन लोगों की सूची में जगह नहीं बना पाए, जिनमें से अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप इस पद के लिए अपने पंसदीदा उम्मीदवार को नामित करेंगे। मीडिया ने शनिवार को इसकी जानकारी दी। सुप्रीम कोर्ट जस्टिस एंथनी केनेडी की जगह लेने के लिए ट्रंप सोमवार को अपने उम्मीदवारों की घोषणा करेंगे। केनेडी ने पिछले माह अपनी सेवानिवृत्ति की घोषणा की थी।

जख्म तक सही डोज पहुंचाकर इलाज करेगी स्मार्ट बैंडेज

न्यूयॉर्क। जख्म का ठीक का न होना अब बीते दिनों की बात होगा। विशेषज्ञों ने एक ऐसी स्मार्ट बैंडेज बनाने का दावा किया है जो जख्म तक दवा का सही डोज पहुंचाकर उसे सही कर देगी।

मैसाच्यूसेट्स स्थित टफ्ट्स यूनीवर्सिटी में हुए शोध में विशेषज्ञों ने बताया कि इस स्मार्ट बैंडेज में प्रॉसेसर लगा हुआ है, जो जख्म की हालत पर नजर रखता है। यह जरूरत पड़ने पर एंटीबायोटिक दवाओं का डोज भी जख्म तक पहुंचाता है। स्मार्ट बैंडेज में पीएच और तापमान को मापने वाले सेंसर लगे हैं, जो उसमें संक्रमण या जलन की निगरानी करता है। विशेषज्ञ लैब में इस पट्टी का परीक्षण कर चुके हैं। उनका कहना है कि इस अत्याधुनिक पट्टी की मदद से चिकित्सा की दृष्टि से मुश्किल कहे जाने वाले जख्मों का इलाज करना मुमकिन हो सकेगा। जलने से होने वाले जख्मों, डायबिटीज के मरीजों के जख्म और इसी तरह की अन्य समस्याओं में इस पट्टी से काफी मदद मिल सकती है। इस शोध के नतीजे पत्रिका स्मॉल में प्रकाशित हो चुके हैं। प्रमुख शोधकर्ता और इलेक्ट्रिकल व कंप्यूटर इंजीनियरिंग में पीएचडी प्रोफेसर समीर सोनकुसले का कहना है कि इस पट्टी में लगे सेंसर जख्म की ठीक होने की प्राकृतिक प्रक्रिया में मदद करते हैं। पट्टी में लगे माइक्रोप्रॉसेसर सेंसर से मिलने वाले डाटा का आकलन करते हैं और उसके मुताबिक जख्म के लिए एंटीबायोटिक दवा जारी करते हैं। यह पट्टी पारदर्शी है और इसकी मोटाई 3 मिलीमीटर से भी कम है। इस पट्टी के दाम को कम रखने के लिए विशेषज्ञों ने सजगता से इसके पुर्जों का चुनाव किया है। माइक्रोप्रोसेसर के अलावा इस पट्टी का दोबारा इस्तेमाल नहीं किया जा सकता है।

पुतले योगा वी करदे ने... *चीन के शहर शंघाई के एक शॉपिंग मॉल में रखा गया यह स्टैच्यू यहां आने वाले हर शख्स को काफी पसंद आ रहा है। योग करते एक व्यक्ति की शेप में बना यह स्टैच्यू लोगों को एट्रेक्ट करने के लिए ही लगाया गया है।*

नोबेल के विरोध में एक नया साहित्य पुरस्कार का गठन

स्टॉकहोम (एजेंसी)। इस साल का नोबेल साहित्य पुरस्कार सेक्स स्कैंडल में फंस कर स्थगित हो जाने के विरोध में स्वीडन के 100 से ज्यादा बुद्धिजीवियों ने मिलकर पुरस्कार देने वाला एक नया निकाय बना लिया।

इस नए निकाय को 'द न्यू एकेडमी' का नाम दिया गया है।

इसके सदस्यों में लेखक, कलाकार और पत्रकार शामिल हैं। द न्यू एकेडमी में शामिल 107 बुद्धिजीवियों ने एक संयुक्त वक्तव्य में कहा कि वैकल्पिक पुरस्कार पूर्वग्रह, हेकड़ीबाजी और यौनवाद को नकारता है।

यह लोगों को यह याद दिलाने के लिए है कि साहित्य और कला को बिना किसी विशेषाधिकार के लोकतंत्र, पारदर्शिता, संवेदना और सम्मान को बढ़ावा देना चाहिए। इस कारण स्थगित हुआ पुरस्कार :- नोबेल पुरस्कार विजेताओं को चुनने वाली स्वीडिश

एकेडमी पिछले साल नवंबर में तब संकट में फंस गई, जब 18 महिलाओं ने दावा किया कि इस संस्था से लंबे वक्त जुड़ी एक प्रभावशाली फ्रांसीसी सांस्कृतिक हस्ती ने उनका बलात्कार किया, उनपर यौन हमले किए या उन्हें परेशान किया। इस खुलासे के बाद इस विवाद को हल करने के मुद्दे पर इसके 18 सदस्यों में मतभेद पैदा हो गए थे। प्रथम महिला सचिव सारा दानियस समेत छह लोगों ने इस्तीफा दे दिया। इसके बाद एकेडमी ने मई में घोषणा की कि इस साल कोई नोबेल साहित्य पुरस्कार नहीं दिया जाएगा।

»» कैलाश मानसरोवर यात्रा:

1200 से ज्यादा फंसे भारतीय यात्री सुरक्षित निकाले गए

काठमांडो (एजेंसी)। इनेपाल के पर्वतीय सिमीकोट क्षेत्र से 1,200 से अधिक भारतीय तीर्थयात्रियों को शुक्रवार को सुरक्षित जगहों पर भेजा गया।

यह जानकारी यहां भारतीय दूतावास ने दी। इसके साथ ही तिब्बत स्थित कैलाश मानसरोवर की यात्रा से लौटते समय खराब मौसम के चलते हिल्सा क्षेत्र में फंसे तीर्थयात्रियों को सुरक्षित निकालने के प्रयास जारी हैं।

सिमीकोट से सुरक्षित निकाले गए तीर्थयात्रियों को नेपालगंज और सुरखेट पहुंचाया गया है। ये दोनों नगर भारतीय सीमा के नजदीक हैं और दोनों जगह बेहतर स्वास्थ्य देखभाल और अवसंरचना सुविधाएं हैं।

भारतीय दूतावास ने एक बयान मेंकहा, 'आज तक ठोस प्रयासों के जरिए 1,225 फंसे हुए तीर्थयात्रियों को सिमीकोट से हेलीकॉप्टर के जरिए सुरक्षित निकालकर नेपालगंज और सुरखेट पहुंचाया गया है। हेलीकॉप्टर के जरिए सुरखेट पहुंचाए गए तीर्थयात्रियों को नेपालगंज ले जाने के लिए बस सेवा भी लगाई गई है। दूतावास ने हिल्सा में फंसे 675 तीर्थयात्रियों को हेलीकॉप्टर से सिमीकोट ले जाने और फिर आगे नेपालगंज पहुंचाने के लिए टूर ऑपरेटरों के साथ भी काम किया।'

बयान के मुताबिक तीर्थयात्रियों को सुरक्षित निकालने की प्रक्रिया के दौरान 74 व्यावसायिक उड़ानें संचालित की गईं और इसके अतिरिक्त दूतावास ने नेपाल सेनाके हेलीकॉप्टरों के साथ निजी हेलीकॉप्टरों- एमआई-16 की भी सेवा ली जिन्होंने हिल्सा-सिमीकोट-नेपालगंज के दुरूह क्षेत्रों में 142 से अधिक उड़ानें भरीं।

इससे पहले शुक्रवार को भारतीय दूतावास के एक अधिकारी ने बताया कि तिब्बत सीमा के नजदीक हिल्सा में फंसे तीर्थयात्रियों की संख्या अब 'लगभग ना के बराबर' है।

अधिकारी ने कहा कि सुरखेट और नेपालगंज भेजे गए अनेक तीर्थयात्री पहले ही भारत के लिए अपनी आगे की यात्रा शुरू कर चुके हैं। उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश सरकार ने अपनी राज्य परिवहन बसों की तैनाती कर प्रक्रिया में मदद की है। भारतीय दूतावास ने कहा था कि 275 तीर्थयात्रियों को गुरुवार हिल्सा से सुरक्षित निकाला गया था जिससे पिछले तीन दिनों में सुरक्षित स्थानों पर भेजे गए तीर्थयात्रियों की संख्या 675 हो गई।

दूतावास ने शुक्रवार के तीर्थयात्रियों के लिए गुरुवार को एक संशोधित परामर्श भी जारी किया था और कहा था कि वे यात्रा पर बढ़ने से पहले चिकित्सा जांच करा लें।

सोमवार को खराब मौसम के चलते हिल्सा और सिमीकोट में 1,500 से अधिक तीर्थयात्रियों के फंसने के बाद दूतावास ने राहत अभियान शुरू किया था।

साथ ही कहा गया, 'राहत अभियान के तहत दूतावास ने अपने अधिकारियों और प्रतिनिधियों को हिल्सा, सिमीकोट, नेपालगंज और सुरखेट प्रभावित क्षेत्रों में बुजुर्ग और बीमार तीर्थयात्रियों को मदद

तथा चिकित्सा जांच उपलब्ध कराने के लिए दवाओं के साथ भेजा और तैनात किया।' दूतावास ने तीर्थयात्रियों और उनके परिजनों के लिए एक हॉटलाइन भी स्थापित की थी जिसमें तमिल, तेलुगू, कन्नड़ और मलयालम भाषा बोलने वाला स्टाफ भी शामिल है। चीन के अधीन तिब्बत क्षेत्र में स्थित कैलाश मानसरोवर हिन्दुओं, बौद्धों और जैनों के लिए पवित्र तीर्थस्थल है और हर साल सैकड़ों भारतीय प्रतिकूल मौसम परिस्थितियों में इस यात्रा पर जाते हैं।

नवसारी : ट्रैक में क्षति होने से रेल यातायात बाधित, ट्रैकमैन ने दौड़कर रूकवाई ट्रेन

देवधा के पास अंबिका नदी के रेलवे ट्रैक पर ट्रैकमैन की सतर्कता से हादसा टला

सूरत। संवाददाता,

सूरत। नवसारी जिले के बिलीमोरा के समीप स्थित देवधा के पास से गुजर रही अंबिका नदी के रेलवे ट्रैक में क्षति होने की जानकारी होने पर ट्रेन उस पर से न गुजरे इसके लिए दौड़कर आ रही ट्रेन को ट्रैकमैन ने रूकवाया। जिससे संभावित दुर्घटना टल गई। नवसारी जिले से देवधा के समीप से गुजर रही अंबिका नदी पर ट्रैक में क्षति हो गई। जिससे ट्रैकमैन को पता चला और उस पर से ट्रेन गुजरती तो बड़ी दुर्घटना होने की आशंका थी। जिससे ट्रैकमैन ने जागरूकता दिखाई और ट्रेन जिस दिशा से आ रही थी, वह बिलीमोरा की तरफ दौड़ा। 400 मीटर दौड़कर जयपुर-बांद्रा ट्रेन को रूकवाया। ट्रैकमैन ने सूझबूझ से कार्य किया, जिससे संभावित बड़ी दुर्घटना टल गई और हजारों यात्रियों की जान बच गई।नदी के ब्रिज पर रेलवे ट्रैक पर की क्षति को दूर करने के लिए फौरन रेलवे विभाग द्वारा कार्यवाही शुरू की गई। ट्रैक की कार्यवाही दौरान ट्रेन व्यवहार बाधित हुई।

सूरत। शनिवार को पुलिस आयुक्त सतीश शर्मा ने साईबर क्राईम पुलिस थाने का शुभारम्भ किया।

अल्पेश, जिज्ञेश और हार्दिक के विरूद्ध अपराध दर्ज किया

अल्पेश, जिग्नेश, हार्दिक सहित ६ के विरूद्ध में गैरकानूनी मकान में घुसकर गलत आरोप लगाने के मामले में शिकायत

अहमदाबाद । सोला में हुए लठ्ठाकांड की वजह से विधायक अल्पेश ठाकोर, जिज्ञेश मेवाणी और पास के नेता हार्दिक पटेल ने गांधीनगर के आदिवाडा गांव में एक महिला के घर में घुसकर जनता छापेमारी करने पर गांधीनगर सेक्टर-२१ पुलिस ने अपराध दर्ज किया गया है। पुलिस ने अल्पेश ठाकोर, जिग्नेश मेवाणी, हार्दिक पटेल सहित छह के विरूद्ध में गैरकानूनी मकान में घुसकर गलत आरोप लगाने के मामले में शिकायत की है। सोला गांव में बुधवार को हुए लठ्ठाकांड बाद विधायक अल्पेश ठाकोर, जिज्ञेश मेवाणी, हार्दिक पटेल, मुकेश भरवाड, चेतन ठाकोर, प्रवीण भरवाड सहित १५ से ज्यादा व्यक्ति गांधीनगर एसपी ऑफिस के सामने स्थित आदिवाडा गांव में रहती कंचनबहन मकवाणा के घर में घुसकर जनता छापेमारी की गई थी। भीड़ के साथ मिलकर छापेमारी करने पर इसमें से दो देशी शराब की थैली मिली थी । इस मामले में पुलिस ने जांच करने पर जानकारी मिली है कि इस छापेमारी में स्थित विरमगाम के एक युवक ने चोरी से शराब की दो थैली कंचनबहन के घर में रखी गई थी । अल्पेश ठाकोर, जिज्ञेश मेवाणी और हार्दिक पटेल सहित १५ से ज्यादा व्यक्ति के विरूद्ध में पुलिस ने अपराध दर्ज करके जांच शुरू की गई है। कंचनबहन के घर में भीड़ घुस गया था और कोने कोने जांच की थी । कंचनबहन ने विनंती की फिर भी तीनों ने नहीं माना छापेमारी की थी ।

घटना की जानकारी यह है कि, अल्पेश ठाकोर, जिज्ञेश मेवाणी और हार्दिक पटेल ने गांधीनगर एसपी ऑफिस के सामने कंचनबहन नाम की महिला के घर में जनता छापेमारी की गई थी । उनके

तीनों के धरना से माहौल तनावपूर्ण

अल्पेश, जिज्ञेश और हार्दिक पटेल धरना पर

नशाबंदी के मुद्दे पर गुजरात के मुख्यमंत्री रुपाणी के नेतृत्व में भाजपा सरकार और हार्दिक, अल्पेश और जिज्ञेश तीनों नेता सामने आ गये है। शनिवार को देर शाम को यह तीनों नेता ने गांधीनगर में एसपी ऑफिस पर धरना प्रदर्शन किया । बड़ी संख्या में लोगों के साथ यह तीनों नेता गांधीनगर एसपी ऑफिस पर पहुंच गये और भारी अराजकता फैल गई थी। तीनों नेता ने सरकार के विरूद्ध जंग की शुरूआत कर दी है। नशाबंदी को लेकर शनिवार को यह तीनों नेता के विरूद्ध पुलिस शिकायत होने के बाद गांधीनगर की एसपी ऑफिस पर सामने से पहुंचे थे और धरना पर बैठ गये थे । इस स्थिति में यह तीनों के साथ पांच विधायक भी शामिल हुए। दूसरी तरफ पुलिस ने बताया है कि इसके साथ बिना कोई भी प्रकार की जनता छापेमारी उचित नहीं माना जा सकता है। दूसरी तरफ हार्दिक पटेल ने गुजरात में नशाबंदी की परिस्थिति के बारे में चौंकानेवाली बात की है।

घर में से दो छोटी थैली देशी शराब की मिली थी । इस घटना के बाद महिला ने यह आरोप लगाया गया है कि, विधायक के साथ आया एक लड़का खुद ही शराब लेकर आया और मेरे घर में घुसने का प्रयास किया था । इस घटना के बाद गांधीनगर पुलिस ने प्रवीण भरवाड नाम के युवक की पूछताछ शुरू की थी ।

पांडेसरा में ढाई साल की मासूम से पड़ोसी ने किया दुराचार

सूरत। पांडेसरा क्षेत्र मे पड़ोसी ने अकेलेपन का लाभ उठाकर ढाई साल की मासूम बच्ची के साथ दुराचार करने की शिकायत दर्ज होने पर पांडेसरापुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर कानूनी कार्यवाही शुरु की है। पोंडेसरा क्षेत्र में रहकर एम्ब्रोडरी मशीन में काम करने वाले श्रमिक की ढाई साल की मासूम बच्ची 5 जुलाई को दोपहर में पड़ोसी फ्रान्सीस अरुण नायडू उस समय घर में अकेला था, उसकी 15 साल की पुत्री स्कूल और पत्नी नौकरी पर गयी थी।

अकेलेपन का लाभ उठाकर फ्रान्सीस ढाई साल की मासूम बच्च के साथ शारीरिक छेड़खान कर रहा था। इस दौरान मासूम बच्ची को लेने के लिए उसकी मां आ गई, जिससे अरुण रंगेहाथों घिनौना हरकरत करते हुए पकड़ा गया।

रथयात्रा में इस बार फीटनेस की थीम पर अखाडा करतब

अहमदाबाद । अहमदाबाद शहर में १४ जुलाई को भगवान जगन्नाथ की रथयात्रा निकाली जायेगी तब रथयात्रा में अखाडाओं के आकर्षण का काफी महत्वपूर्ण और इतिहास रहा है । रथयात्रा में ३० से ज्यादा अखाडा शामिल होंगे और अंग कसरत तथा कला-कौशल के अनोखा करतब श्रद्धालु नागरिकों को बताकर आकर्षण पैदा करेंगे ।

नकली डोमिसाइल सर्टीफिकेट गोटाले में आरोपियों का फिर से बयान लिया गया

सूरत। पुणा गाम अर्चना स्कुल भातनी वाड़ी के पास जनसेवा केन्द्र से बरामद की गई आय के प्रमाणपत्र तथा डोमिसाइल सर्टीफिकेट के मामले में अपराध को मंभीरता से लिया गया है। इस अपराध की जांच उच्च अधिकारियों द्वारा पुणा पुलिस थाने के पीआई को सौंपे जाने पर उन्होंने आरोपियों के पिरवार के बयान दर्ज कराने की शुरुआत की । पुलिस सूत्रों से प्राप्त जानकारी के अनुसार शनिवार शाम को नायब मामलतदाह और अजीत मेहता को पूछताछ व बयान दर्ज कराने के लिए पुलिस ने बुलाया। पुलिस के अनुसार पुणा पुलिस थाने में डॉ. अरविंद वीर डिया ने फर्जी डोमिसाइल सर्टीफिकेट और आय का प्रमाणपत्र निकालकर देने की शिकायत दर्ज कराई, जिसके बाद पुणा पुलिस ने जनसेवा केन्द्र पर छापेमारी किया। जनसेवा केन्द्र में कातरिया एन्ड सन्स नामक ऑफिस से फर्जी डोमिसाइल सर्टीफिकेट तथा आय का प्रमाणपत्र व नो क्रिमीलेयर सर्टीफिकेट बनाकर देने का घोटाला पकड़ाने के बाद चूडासमा सहित चार सूरतियों का 11 जुलाई तक का रिमान्ड पाने के बाद इस अपराध की जांच कर रहे किरीट सावलिया ने जनसेवा केद्र पर आरोपियों को साथ रखकर जांच शुरु किया था। पुलिस ने पंचनामा कर सबूत के अनुरुप कम्प्युटर, स्कैनर, लैपटापतथा सीड़ी जब्त किया। उसके बाद उच्च पुलिस आधिकारियों ने अपराध की मंभीरता को ध्यान में रखकर जांच पीआई से कराने का आदेश देने के बाद सभी आरोपियों का फिर से बयान लेना शुरु किया है।

गैंगरेप केस में आरोपियों के विरूद्ध कोई सबूत नहीं

अहमदाबाद । अहमदाबाद शहर सहित राज्यभर में सनसनी मचाने वाले सेटेलाइट गैंगरेप केस में अहमदाबाद शहर क्राइमब्रांच द्वारा आखिर में केस की पूरी जांच का सविस्तार रिपोर्ट गुजरात राज्य महिला आयोग को सौप दिया है । हालांकि इस रिपोर्ट में केस के आरोपियों के विरूद्ध कोई सबूत नहीं होने का उल्लेख किए जाने की जानकारी मिली है । क्राइमब्रांच के इस चौंकानेवाले खुलासे के बाद केस में नया मोड आया है । दूसरी तरफ, अब गुजरात राज्य महिला आयोग अब पुलिस के इस रिपोर्ट की समीक्षा करने के बाद राज्य सरकार को जरूरी सिफारिशें करेगी । घोडासर क्षेत्र में रहते एक व्यापारी की पुत्री का दोपहर में अपहरण करके इस पर सामूहिक दुष्कर्म केस में शहर क्राइमब्रांच को जांच सौंपी गई थी । हालांकि पीड़िता द्वारा क्राइमब्रांच के जेसीपी जेके. भट्ट के सामने खराब व्यवहार सहित के लगाये गये गंभीर आरोपों के बाद उनको इस केस की जांच में हटा दिया गया था, जिसकी वजह से ज्यादा हलचल तेज हो गई थी । दूसरी तरफ, एक के बाद एक सभी आरोपी पुलिस के समक्ष उपस्थित हो जाने पर काफी चर्चा होने लगी । इतना ही नहीं खुद आरोपियों में गौरव दालमीया, वृषभ मारू और यामिनी नायर ने उनका नार्को, पोलीग्राफिक और लाइव डिटेक्शन टेस्ट कराने के लिए मेट्रोपोलिटन कोर्ट में अज र्ी करने पर केस में महत्व का डेवलपमेन्ट सामने आया था । शनिवार को भी आरोपियों ने अपने ब्रेइन मेपींग टेस्ट के लिए मेट्रो कोर्ट में अर्जी की थी । कोर्ट ने आरोपियों के वैज्ञानिक परीक्षण के लिए मंजूरी मांगी थी । दूसरी तरफ, अहमदाबाद शहर क्राइमब्रांच के पास से गुज रात राज्य महिला आयोग ने सात दिन की तय सीमा में केस की जांच और प्रगति रिपोर्ट की मांग की गई थी, जिसके संदर्भ में क्राइमब्रांच द्वारा राज्य महिला आयोग को सीलबंध कवर में केस का सविस्तार जांच रिपोर्ट पेश किया गया था।

तापी के सोनगढ में ९ इंच से भी ज्यादा बारिश

दक्षिण गुजरात में भारी बारिश से जनजीवन ठप

अहमदाबाद । दक्षिण गुजरात में भारी बारिश की वजह से जनजीवन फिर से एकबार ठप हो गया है। अलग-अलग हिस्सों में घंटे में ही नौ इंच तक बारिश हुई है। मिली जानकारी के अनुसार, आहवा, सापुतारा, तापी के सोनगढ सहित के क्षेत्रों में घंटे में ही भारी बारिश की वजह से ही चारोंतरफ ज लबंबाकार की स्थिति पैदा हो गई है। भारी बारिश की वजह से लोग भी परेशानी में आ चुके है। प्राप्त जानकारी के अनुसार, वधई में ८.७ इंच, आहवा में सात इंच से ज्यादा, सापुतारा में ५ इंच से ज्यादा, डांग के सबर गांव में ८ इंच से ज्यादा, तापी के सोनगढ में ८ इंच से ज्यादा बारिश कुछ ही घंटो में हो जाने पर प्रशासन ने सावधानी के सभी कदम उठाये है। दक्षिण गुजरात में भारी बारिश की वजह से नदी भी दो किनारे हो गई है। डांग में कोजवे पानी में डूब जाने पर कई गांव संपर्क बिना के हो गये है। धरमपुर में उपरवास में हो रही बारिश की वजह से नदियों में पानी का स्तर बढ़ गया है। दक्षिण गुजरात के सोनगढ में नौ इंच जितनी बारिश हो चुकी है। डांग, व्यारा, उमरपाडा सहित के क्षेत्रों में तीन इंच से ज्यादा बारिश हुई है। प्रशासन द्वारा निचलेवाले और नदी किनारे के क्षेत्र में रहते लोगों को समुद्र किनारे नहीं जाने के लिए और सावधान रहने की सूचना दी गई है। दूसरी तरफ सावधान हो गया है। संबंधित अधिकारियों को सावधान रहने के लिए कहा गया है। बारिश का माहौल अभी भी रहे ऐसा संकेत दिखाई दे रहा है। उत्तर और मध्य गुजरात, सौराष्ट्र और कच्छ के कई हिस्सों में हल्की बारिश का दौर जारी रहने की संभावना है। गुजरात के अन्य कई हिस्सों में हल्की बारिश का दौर पिछले २४ घंटों में जारी रहा है। अहमदाबाद में बारिश में ब्रेक की स्थिति देखने को मिल रही है। हल्की बारिश होने के बाद बारिश के सिजन में मक्खीजनित और जलजनित महामारी के केस में वृद्धि हो रही है । गत वर्ष की तुलना में आंकड़ा निश्चितरूप से कम है लेकिन केस पर नियंत्रण नहीं आ रहा है। जलजनित केस की बात की जाए तो पिछले सप्ताह के दौरान उल्टी-दस्त के २६२ केस सामने आये है जबकि पीलिया के पिछले सप्ताह के दौरान १२८ और टाइफाइड के १२३ केस सामने आये है। दूसरी तरफ मक्खीजनित केस की बात की जाए तो पिछले सप्ताह के दौरान साधारण मलेरिया के ११२ केस दर्ज किए गए हैं।

महादेव मीडिया
रोहताश यादव 9924144499, 7015339195
वीजिटिंग कार्ड, बिल बुक, लेटर पैड, बेनर, पोस्टर, आदि का डिजाइन बनवाने के लिए संपर्क करें। (हिन्दी, गुजराती)
हिन्दी, गुजराती न्युज पेपर डिजाईन करवाने के लिए संपर्क करें।
304 केवल कॉम्पलेक्ष नवा गाम, डिंडोली, उधना सूरत।

स्वामी, मुद्रक व प्रकाशक सुरेश मौर्या द्वारा अष्ट विनायक ऑफसेट एफपी. 149, प्लोट 26 खोडियार नगर, सिद्धीविनायक मंदिर के पास, (भाटेना) हॉ.सो. अंजना सूरत, गुजरात से मुद्रित, एवं 191 महादेव नगर, हरि नगर-2 के पीछे, उधना, जिला-सूरत, गुजरात से प्रकाशित, **संपादक :- सुरेश मौर्या** फोन नं. (9879141480) **RNI.No. : GUJHIN/2018/75100**, E-mail: krantisamay@gmail.com